ISSN 2278-8808 SJIF 2014 = 4.889
An International Peer Reviewed & Referred
SCHOLARLY RESEARCH JOURNAL
FOR INTERDISCIPLINARY STUDIES

"सत्य" एक जीवन मूल्य

S. K. Pundir, Ph. D.

Associate Professor, Dept. of Education, Meerut College Meerut

Abstract

श्री तुलसीदास जी द्वारा रचित ग्रन्थ 'रामचरितमानस' सत्य की वह धुरी है, जिसके चारों ओर समस्त संसार चक्कर लगाता है। जिसमें उन्होंने दिखाया है कि प्रत्येक संस्कृति के कुछ ऐसे नियम, उपनियम एवं परम्पराएँ होती हैं, जो जीवन मूल्यों की नींव रखते है। मनुष्य के जीवन को, सुखमय, विवेकपूर्ण और समाज को निर्मल बनाने के लिए, मूल्य मार्ग दिखाने का कार्य करते हैं। ऐसे मानदंड निर्धारित करने में धर्मग्रंथों, शास्त्रग्रंथों एवं मूल्यनिष्ठ साहितियक रचनाओं का बहुत योगदान होता है। उन सब ग्रन्थों में 'रामचरितमानस' का स्थान अतिमहत्वपूर्ण है। ये मूल्य ही समाज की आधारशिला होते हैं। रामचरितमानस में गोस्वामी जी ने सत्य को इतना व्यापक रूप प्रदान किया है कि रामचरितमानस, सत्य वचन का पर्याय बन गया है। रामचरितमानस में सत्य हर स्थान पर देखने को मिलता है और भगवान श्रीराम तो सत्य का प्रतीक ही दिखायी देते है। इसलिए तुलसीदास जी उन्हें अनेक स्थानों पर ***सत्यसंध*** *कहते है। श्री राम ने कभी भी असत्य बात नहीं कही और ना ही असत्य बात का समर्थन किया।*

मुख्यबिन्दु : *मूल्य, सत्य, धर्म, विश्वास और सुन्दरता।*

Scholarly Research Journal's** is licensed Based on a work at **www.srjis.com

प्रस्तावना–

सत्य संसार की बहुत बड़ी शक्ति है, सत्य के बारे में "**व्यवहारिक बात यह है कि सत्य परेशान हो सकता है किन्तु पराजित नहीं**" भारत में अनेक सत्यवादी हुए है, जिनका उदाहरण, आज भी दिया जाता हैं। जैसे **राजा हरिश्चन्द्र, सत्यवीर तेजाजी महाराज आदि**। इन्होने अपने जीवन में यह निश्चित किया था कि चाहे कुछ भी हो जाए, वे सत्य की राह को कभी नहीं छोड़ेंगे। सत्य का शाब्दिक अर्थ होता है **सते हितम्** यानि सभी का कल्याण। इस हित की भावना को हृदय में रखकर ही मनुश्य सत्य बोल सकता है। एक सत्यवादी व्यक्ति वर्तमान, भूत अथवा भविष्य के विषय में सोचे बिना अपनी बात पर दृढ़ रहता है। **रामानुज जी** ने भी कहा था–**"व्यवहार योग्यता सत्यम।"**

वैसे तो सत्य को मुख्य रूप से दो प्रकार का माना जाता है– एक वास्तविक सत्य और दूसरा व्यवहारिक। वास्तविक सत्य को परम सत्य भी कहते है। जिसका यह अर्थ निकलता है कि सभी प्राणियों में धारण करने वाली आत्मा एक सी ही है, वह मनुश्य के मरणोरान्त तक समान रूप में रहती हैं।

अजन्मी और अमर, इस आत्मा के आधार पर ही भारीर चलता है! और वो आत्मा ही ईश्वर अंश है। इसी भाव को जानना ही परम सत्य है। व्यवहारिक सत्य उस सत्य को कहते है जो जैसा देखा, जैसा सुना और जैसा अनुभव किया, उसको उसी रूप में बोलना ही सत्य कहलाता है। परन्तु व्यवहारिक सत्य में हो सकता है, जो एक के लिए सत्य है, वह दूसरे के लिए असत्य हो। क्योंकि हर व्यक्ति अपने मुताबिक अपना सत्य बना लेता है। इसीलिए व्यवहारिक सत्य, अनुभव, और देश, काल के आधार पर भिन्न–भिन्न हो सकता है। जैसे – **जीवन का आधार धर्म है और धर्म का आधार सत्य है**। नीति का पालन करना, अपनी सीमा का उल्लंघन ना करना, न्याय के मार्ग पर चलना आदि। हर मनुष्य के कर्तव्य अलग–अलग होते हैं। परन्तु सब सत्य सब के लिए समान होता हैं, जिसका उल्लंघन किये बिना, एक आदर्श जीवन व्यतीत करना ही सत्य सीखाता है। हर जीव को, अच्छी–बुरी हर तरह की स्थिति में उचित निर्णय लेते हुए सत्य का साथ देना होता है। हम सबके जीवन में नित नए संघर्ष आते हैं, हर समय सही और गलत का निर्णय लेने में कठिनाईयाँ होती हैं। परन्तु इन कठिनाईयों को दूर करके निर्णय लेना ही सत्यता है। हमें भी अपने समाज और परिवार में इसी प्रकार का जीवन व्यतीत करना चाहिए। यही परम सत्य और परम धर्म है।

रामचरितमानस और सत्य

श्री रामचरितमानस में हमें सत्य चारों ओर दिखाई देता है, सत्य को स्वीकार करके उसका पालन करना परम आवश्यक माना है, क्योंकि सत्य ही धर्म का आधार है और सच्चा धर्म वही है जो अपने आंचल में सत्य को समाहित करके कार्य करें, क्योंकि सत्य के समान कोई दूसरा धर्म नहीं है। यह केवल काल्पनिक मत नहीं है अपितु इसे वेद, पुराणों और शास्त्रों आदि में समय–समय पर सिद्ध किया गया है।

श्रीतुलसीदास जी रामचरितमानस में कहते हैं कि मनुष्य को सत्य की महिमा जाननी और समझनी चाहिए। जो भी सत्य निष्ठा से किसी पर स्नेह करता है, वह उसे निःसंदेह प्राप्त होती है। क्योंकि मनुष्य तो क्या ईश्वर भी स्नेह और प्रेम के वशीभूत है।

"जेहि कें जेहि पर सत्य सनेहू। सो तेहि मिलइ न कछु संदेहू।।" (1/258/3)

श्री रामचरितमानस में सभी सत्य का पालन करते हैं, राजा दशरथ को जब यह पता चलता है कि रानी केकैयी कोप भवन में विलाप कर रही है, तो वे उनके पास जाते हैं और उनसे कहते हैं कि हमारे रघुकुल में सत्य की परंपरा सनातन काल से चली आ रही है। हमारे कुल में अपनी बातों को सत्य सिद्ध करने के लिए प्राण तक न्यौछावर कर दिए जाते हैं। हमारे कुल में करनी और कथनी में कभी अंतर नहीं मिलता है। हम जो एक बार वचन दे देते हैं उसे सत्य करने के लिए हम अपने प्राणों का त्याग भी कर देते हैं।

"झूठेहुँ हमहि दोषु जनि देहू। दुइ कै चारि मागि मकु लेहू।।
रघुकुल रीति सदा चलि आई। प्रान जाहुँ परु बचनु न जाई।।" (2/27/2)

महाराज दशरथ रानी केकैयी को समझाते हुए कहते हैं कि असत्य के समान दूसरा कोई पाप नहीं है, जिस प्रकार करोड़ों घुँघचियाँ मिलकर भी एक पहाड़ का निर्माण नहीं कर सकती। उसी प्रकार अनेक असत्य मिलकर भी सत्य नहीं बन सकते। क्योंकि सत्य ही समस्त पुण्य की जड़ है और यह बात वेद पुराण में प्रसिद्ध रूप से कही गई है और महाराज मनु ने भी अपने कथन में यही कहा है

"नहिं असत्य सम पातक पुंजा। गिरि सम होहिं कि कोटिक गुंजा।।
सत्यमूल सब सुकृत सुहाए। बेद पुरान बिदित मनु गाए।।" (2/27/3)

श्रीरामचरितमानस में सत्य को भगवान श्रीराम के प्रतीक के रूप में माना गया है, क्योंकि जब राजा दशरथ रानी केकैयी को समझाते हुए कहते हैं कि वैसे तो मेरे वचन ही सत्य हैं परन्तु फिर भी, मैं राम की कसम खाता हूँ कि मैं जो कहूँगा, वह अवश्य पूरा करूँगा। क्योंकि जैसे महाराज दशरथ राम का त्याग नहीं कर सकते, उसी प्रकार सत्य का त्याग भी नहीं कर सकते। यहाँ पर सत्य को भगवान श्रीराम के समान माना गया है।

"तेहि पर राम सपथ करि आई। सुकृत सनेह अवधि रघुराई।।" (2/27/4)

गोस्वामी जी कहते हैं कि सत्य का पालन करना बहुत ही गर्व और सौभाग्य की बात होती है, जिस समय भगवान राम वन जाते है तो माता कौशल्या से कहते हैं। हे! माता वह पुत्र बड़ा ही सौभाग्यशाली होता है, जो अपने माता–पिता के वचनों को सत्य करता है। ऐसे पुत्र संसार में कम ही मिलते हैं जो अपने माता–पिता के वचन को सत्य करने के लिए अपना सब कुछ न्योछावर कर देते हैं।

"सुनु जननी सोइ सुतु बड़भागी। जो पितु मातु बचन अनुरागी।।
तनय मातु पितु तोषनिहारा। दुर्लभ जननि सकल संसारा।।" (2/40/4)

श्री रामचरितमानस में जब भगवान श्रीराम, महामंत्री सुमन्त्र जी को समझाते हुए कहते हैं कि इस संसार में सत्य से बढ़कर कोई दूसरा धर्म नहीं है। जिसका वर्णन वेद, पुराण और शास्त्र, सभी ने किया है और जो भी सत्य का परित्याग करता है उसके जीवन में अंधकार छा जाता है। इसलिए मैं सत्य का पालन करूँगा और अयोध्या वापस 14 वर्ष के बाद ही जाऊँगा।

"धरमु न दूसर सत्य समाना। आगम निगम पुरान बखाना।।" (2/94/3)

जब चित्रकूट में राम को वापस लाने के लिए सभा होती है तो उसमें श्रेष्ठ मुनि वशिष्ट जी कहते हैं कि हे सभासदों! हे भारत, श्रीराम सत्य को मानने वाले है और वेदों की मर्यादा की रक्षा करने के लिए आए हैं। श्री राम का जन्म इस संसार में कल्याण करने के लिए हुआ है, उनके द्वारा असत्य पर सत्य की विजयपताका फैराने का कार्य किया जायेगा। जिसका गुणगान अनंत काल तक होता रहेगा।

"सत्यसंध पालक श्रुति सेतू। राम जनमु जग मंगल हेतु।।" (2/253/2)

श्रीतुलसीदास जी कहते हैं कि भगवान राम सुग्रीव को समझाते हुए कहते हैं, मेरा कथन कभी असत्य नहीं होता है। मैं जो भी कहता हूँ, वह सब सत्य ही होता है यदि मैंने कहा है कि मैं बाली का वध करके तुम्हें राजपाट दिलवाऊँगा, तो मेरी यह बात मिथ्या नहीं है। मेरी करनी और कथनी एक समान होती है।

"जो कछु कहेहु सत्य सब सोई। सखा बचन मम मृषा न होई।।" (4/6/12)

निश्कर्शः

गोस्वामी तुलसीदास जी द्वारा रचित श्रीरामचरितमानस एक अमर ग्रंथ है, यह ग्रंथ समाज के प्रत्येक वर्ग और प्रत्येक क्षेत्र के लिए अत्यंत उपयोगी है। हम अपने सामान्य जीवन में भी रामचरितमानस की बातों, दोहे और चौपाईयों का उदाहरण देते आए हैं। तुलसीदास जी ने इस कृति में सत्य को बहुत ही उच्च और श्रेष्ठ स्थान दिया है। हमें रामचरितमानस में सभी पात्र सत्य आधारित आचरण करते दिखाई देते हैं। तुलसीदास जी ने कहा है कि धर्म जीवन का आधार है और धर्म का आधार सत्य है। जहाँ सत्य नहीं, वहाँ ई वर नहीं। वहाँ केवल अवगुण और राक्षस ही निवास करते हैं। तुलसीदास जी ने सत्य को भगवान श्री राम के समतुल्य बताया है। महाराज दशरथ अपने वचन को सत्य करने के लिए अपने प्राण भी न्योछावर कर देते हैं, उसी प्रकार भगवान श्री राम भी अपने पिता की बात को सत्य करने के लिए 14 वर्ष का वनवास सहस्र स्वीकार कर लेते हैं। सत्य की पराकाष्ठा में भरत भी किसी से पीछे नहीं है, वे भी अपने बड़े भाई श्री राम के होते हुए सिंहासन पर बैठना स्वीकार नहीं करते क्योंकि यह धर्म के विरुद्ध हैं और जो धर्म के विरुद्ध होता है, वह सत्य के विरुद्ध भी होता है। इस प्रकार रामचरितमानस में सभी सत्य पूर्ण आचरण करते हैं और जो कोई भी सत्य के विरुद्ध आचरण करता है या असत्य को बढ़ावा देता है, भगवान श्री राम उनका संहार करके, पुनः सत्य का परचम लहराते हैं और सत्य को पुनर्स्थापित करते हैं।

आज के वर्तमान समय में समाज में सत्य का आचरण करने वाले और सत्य को मानने वाले बहुत ही कम है। आजकल जिधर भी देखो असत्य का बोलबाला है, जिस कारण हमारा समाज और देश दिन प्रतिदिन अवनति के पथ पर चल रहा है, क्योंकि सत्य सब प्रकार के धर्म का आधार है। उसी प्रकार

समाज और देश के हर वर्ग, हर रिश्ते, हर सम्बन्धों और शिक्षा का आधार भी सत्य है। जहाँ शिक्षा में सत्यता नहीं होती, वहाँ पर नैतिक मूल्य का ह्रास होता है। जब तक अध्यापक के व्यवहार और कथन में सत्यता नहीं होगी या कथनी और करनी में अंतर नहीं होगा। जब तक शिक्षा अपना पूर्ण उददेश्य प्राप्त नहीं कर सकती है। इसलिए छात्रों पर उनका प्रभाव नहीं होता और छात्र भी दिन प्रतिदिन मूल्य और संस्कार विहीन होते जा रहे हैं। इसी प्रकार हमारे पारिवारिक रिश्तो में भी चारों ओर असत्य देखने को मिलता है। आज के समय में पिता–पुत्र को आपस में विश्वास नहीं है। ऐसे ही पति, पत्नी से झूठ बोलता हैं और पत्नी, पति से झूठ बोलती हैं और उनका यही झूठ बच्चों पर भी असर डालता है। फिर इसी कारण आए दिन रिश्ते टूट रहे हैं और वैवाहिक जीवन में तलाक की संख्या दिन प्रतिदिन बढ़ती जा रही है। यही हाल आजकल देश को चलाने वाले नेतागण भी कर रहे है, उनकी कथनी और करनी में धरती–आसमान का अन्तर होता है। वह कहते कुछ और हैं और करते कुछ और हैं, जिसके कारण हमारे देश में अव्यवस्था फैली हुई है।

इसलिए यह कहना सर्वथा उचित है कि चाहे देश–समाज की बात, हो चाहे घर–परिवार की बात हो, चाहे किसी भी वर्ग की बात हो, जहाँ पर सत्य नहीं है वहाँ पर धर्म नहीं है और जहाँ पर धर्म नहीं है, वहाँ पर शान्ति, सुकून, भाईचारा और प्रेम आदि नहीं हो सकता। अभी भी समय है कि हम रामचरितमानस के ज्ञान और मूल्यों को अपनी शिक्षा पद्धति में शामिल करें। जिससे हमारे आने वाली पीढ़ी सत्यनिष्ठ और सत्यवान बने क्योंकि राम और सत्य ही ऐसे है, जो हमारे जन्म से लेकर मृत्यु तक, हमारे साथ रहता है। इसीलिए हमारे यहाँ अन्तिम यात्रा के समय भी "**राम नाम सत्य है**" कहा जाता है।

सन्दर्भः

बालकाण्ड़ रामचरितमानस, दो. 258 चौ. 3.
अयोघ्याकाण्ड़ रामचरितमानस, दो. 27, चौ. 2.
अयोघ्याकाण्ड़ रामचरितमानस, दो. 27, चौ. 3.
अयोघ्याकाण्ड़ रामचरितमानस, दो. 27, चौ. 4.
अयोघ्याकाण्ड़ रामचरितमानस, दो. 40, चौ. 4.
अयोघ्याकाण्ड़ रामचरितमानस, दो. 428, चौ. 2.
अयोघ्याकाण्ड़ रामचरितमानस, दो. 94 चौ 3.
अयोघ्याकाण्ड़ रामचरितमानस, दो. 253 चौ. 2.
किश्किन्धाकाण्ड़ रामचरितमानस, दो. 6, दो. 12.